Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973(Online) Vol. 2 Issue 2
A peer reviewed refereed international Journal Impact Factor 3.12
© Contemporary Research Publication

यथार्थबोध : संकल्पना और स्वरूप

डॉ जितेन जे परमार
बहाउद्दीन कला महाविद्यालय
जूनागढ़

पूर्वभूमिका :

'यथार्थ' शब्द का अर्थ है - सत्य, प्रकृत, उचित में - दरअसल, वस्तुतः । अंग्रेजी में इसे 'रियालिज्म' कहा जाता है । दार्शनिकों का यह सिद्धांत कि दुनिया में भौतिक पदार्थो का स्वतंत्र और वास्तविक अस्तित्व है । कितने ही साहित्य सेवियों का यह सिद्धांत कि गुण-दोष मय इस संसार में हमें जो वस्तुएँ जिस रूप में दिखाई पड़ती है, उनका उसी रूप में आदर्शवाद का पुट उसमें न दिया जाय । एक शब्द और भी बनता है, यथार्थवादी जिसे अंग्रेजी में 'रियालिस्ट' और हिन्दी भाषा साहित्य में यथार्थवाद का अनुयायी कहा जाता है ।[१]

यथार्थवाद

यथार्थवाद साहित्य की एक विशिष्ट चिंतन पद्धति है । जिसके अनुसार कलाकार को अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रूप का अंकन करना चाहिए । यह दृष्टिकोण आदर्शवाद का विरोधी माना जाता है । आदर्श उतना ही यथार्थ है जितना कि कोई भी यथार्थवादी परिस्थिति । जीवन में अयथार्थ की कल्पना दुष्कर है । यथार्थवाद जीवन की समग्र परिस्थितियों के प्रति ईमानदारी का दावा करते हुए प्रायः सदैव मनुष्य की हीनताओं तथा कुरूपताओं का चित्रण करता है । मध्यकाल से हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद की अभिव्यंजना होती आई है । विकृतियाँ, कुरूपताएँ आदि का चित्रण करना यथार्थवाद का लक्ष्य है । बीर, तुलसी आदि की रचनाओं में भी यथार्थवादी प्रवृत्ति है । 'रामचरितमानस' के उत्तरकांड में, 'विनयपत्रिका' के पदों में यथार्थवादी दृष्टिकोण है । यथार्थवाद का हिन्दी साहित्य में प्रथम विकास प्रगतिवाद से हुआ है । प्रगतिवादी साहित्य सृजन में यथार्थवाद महत्वपूर्ण अंग बन चुका है । सभी विधाओं में संघर्ष, विद्रुपता अंर्तद्वंद्व तथा कुरूपताओं का अंकन हुआ है । कार्ल मार्कस् और फ्रॉयड ने इसके बाद के विकास में योगदान दिया है । मार्कस्वादी सामाजिक जीवन की कटु वास्तविकताओं की ओर संकेत करते हैं ।

आलोचनात्मक यथार्थवाद :

इसमें दर्शन का महत्व है । मनुष्य अपने परिवेश में खुद अपने से ही अजनबी बनकर रह गया है । वस्तुओं की तरह यह भी एक ऐसी वस्तु है जिसे जब चाहे मालिक की इच्छा के अनसार खरीदा और बेचा जा सकता है । मनुष्य मनुष्य का पुरजा है । अपनी इच्छा-अनिच्छा का महत्व नहीं है ।

समाजवादी यथार्थवाद :

सन् १९३४ ई में पहली कांग्रेस में 'मैक्सिम गोर्की' सर्वप्रथम समाजवादी यथार्थवाद का नाम लेकर उसके चरित्र पर प्रकाश डाला । वस्तुगत यथार्थ को संपूर्णता में उभारा । इतिहास समझना आवश्यक माना । प्रगतिशील शक्ति को उभारने ने की कोशिश की । नई जीवत यथार्थ दृष्टि यथार्थवाद में है । केवल कोरी कल्पना नहीं ह । जैसे रोमेन्टिक स्वप्न होते है । यथार्थ वैज्ञानिक समझ से जन्मा है । जीवन की गतिमान वास्तविकता यथार्थ में है । इसमें समाजवादी दृष्टिकोण भी है । इसमें शासन व्यवस्था का आधार सामान्य जनता का शोषण है । यथार्थवादी लेखक का दावा है कि उसने मनुष्य को सही रूप में परखा, पहचाना और चित्रित किया है । किन्तु मनुष्य सत्य को पहचानने में असमर्थ है ।

यथार्थवादी साहित्य चिंतन :

यथार्थवादी साहित्य चिंतन १९ वी शताब्दी की देन है । वैज्ञानिक आविष्कार के कारण उद्योगीकरण, नई सामाजिक व्यवस्था, नए मानवीय संबंध, नई गद्य भाषा का प्रचलन बढ़ता गया । जीवन को समग्रता में प्रस्तुत करने की क्षमता बढ़ी । साहित्य और कला को यथार्थ जीवन के संदर्भ में देखा । किन्तु साहित्य का मूल्यांकन मात्र साहित्यिक कृति के आधार पर होना चाहिए । कला-चिंतन के केन्द्र में शिव-तत्त्व तथा सहज मानवीय नैतिकता की प्रतिष्ठा होती है । 'तोल्सतोय' कला को लोकमंगल का साधन मानते हैं । वास्तविकता आधुनिक जगत् का चरम सूत्र और नारा है । कला का जीवन से और वास्तविकता से निकट का संबंध है । जीवन के प्रति उत्कृष्ट आग्रह कला-चिंतन का प्राणतत्त्व है ।